दिल्ली घराने के उत्थान में स्वर्गीय उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब का योगदान

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट दयालबाग़, आगरा से

संगीत विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
अस्सिटेंट प्रोफेसर
संगीत-विभाग (तबला)

शोधार्थिनी

आरती गुप्ता

कला संकाय, संगीत विभाग

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा- 282005

2022

भूमिका -

संगीत कला एक उच्च कोटि की उत्कृष्ट कला है, जिसे अन्य कलाओं की अपेक्षा प्राचीनतम माना गया है। यह कला संगीत के कण-कण में व्याप्त है, ऐसा माना जाता है कि मानव जीवन में संगीत कला का अनुपम स्थान है।

पंडित शारंगदेवकृत संगीत रत्नाकर के अनुसार -

'गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यम् त्रयं संगीतमुच्यते'

अर्थात् गायन, वादन तथा नृत्य के समावेश को संगीत कहते हैं। संगीत में गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों कलाओं का समावेश पाया जाता है।

ये तीनों कलाऐं स्वतंत्र होते हुए भी एक दूसरे की पूरक हैं। स्वर एवं लय संगीत के मुख्य उदाहरण हैं। स्वरों से रागों की रचना हुई और लय से ताल की। गायन, वादन तथा नृत्य तीनों को समन्वित रूप आधार प्रदान करना ताल का कार्य है और ताल देने के लिए विभिन्न वा्द्यों का प्रयोग किया जाता है। संगीत में वाद्य का स्थान अतुलनीय है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में वाद्यों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया है - तत्, सुषिर, अवनद्ध, घन।

अवनद्ध वाद्य वे वाद्य हैं जो भीतर से पोले होते हैं और जिनके मुख्य पर चमड़ा मढ़ा होता है। अवनद्ध वाद्यों में आज तबले का स्थान सर्वोपरि है। तबला भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला एक ताल वाद्य है। पूर्व में तबला सिर्फ गायन, वादन तथा नृत्य इत्यादि में संगति हेतु सहयोगी वाद्य के रूप में बजाया जाता था, परन्तु बाद में कई तबला वादक हुए जिन्होंने इसे एकल वादन का माध्यम बनाया और प्रसिद्धि भी अर्जित की।

तबले के दो बाज व पाँच घराने हैं -

1. पश्चिम बाज (बन्द बाज) 2. पूरव बाज (खुला बाज)

पश्चिम बाज के अन्तर्गत दिल्ली तथा अजराड़ा घराने की वादन शैली आती है और यह बाज बन्द बाज कहलाता है। वही पूरव बाज के अन्तर्गत लखनऊ, फर्रूखाबाद और बनारस घराने की वादन शैली आती है। यह

बाज पखावज की वादन शैली से अधिक निकट है। इसे खुला बाज भी कहते हैं।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा अत्यंत प्राचीन व लोकप्रिय है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्राचीनकाल से चली आ रही परम्परा की लोकप्रियता का श्रेय उन सभी महान संगीतज्ञों को जाता है, जिन्होंने जीवन-पर्यन्त संगीत की साधना की। इस संगीत साधना में उनका सम्बन्ध किसी न किसी घराना विशेष से रहा है।

दिल्ली घराना तबले का प्रथम घराना है। इसके प्रवर्तक उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी थे, जो तबले के क्षेत्र में आदिपुरूष साबित हुए। इन्हें तबला जगत का युग पुरूष भी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। उस्ताद सिद्धार खाँ ढ़ाढी के कई शिष्य हुए जिन्होंने तबले में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई तथा दिल्ली घराने को तबला-जगत में स्थापित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

दिल्ली के इन्हीं कलाकारों की श्रृंखला में ऐसी एक महान विभूति के रूप में उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब उभरकर सामने आये, जिन्होंने अपने घराने के उत्थान व उसके प्रसार-प्रचार में विशेष योगदान दिया। महानता के इस शिखर पर पहुँचने के पीछे उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब की जीवनभर की कठोर तपस्या तथा अपने कार्य के प्रति विशेष रूचि थी।

तबला एक ऐसा विषय है जिसके प्रत्येक बोलों पर अधिकार किसी भी साधक के बस की बात नहीं हैं। उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ ऐसे नक्षत्रीय महापुरूष थे, जिन्होंने अल्पायु से ही पूरे देश में अपनी पहचान बना ली थी। उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब ऐसे सर्वगुण सम्पन्न कलाकार हुए जिन्होंने अपने गुरूओं से प्राप्त धरोहर को न केवल बजाया, संजोया अपितु अपनी विशेष योग्यता द्वारा उसमें अपनी ओर से बहुत कुछ जोड़ा भी।

उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब अपने जीवन में एक नामी संगीतज्ञ के रूप में जाने गये तथा चारों ओर अपने संगीत द्वारा ख्याति प्राप्त की। चूँकि शोधार्थी तबले की एक छात्रा है। इसलिए तबले के अनेक विद्वानों की जीवन-वृत्त का अध्ययन किया एवं अनेक विद्वानों के दृश्य-श्रव्य सामगी को भी सुना परन्तु शोधार्थी दिल्ली के प्रसिद्ध तबला नवाज मरहूम उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के तबला वादन से विशेष रूप से प्रभावित हुई तथा

इनकी अनेकों दृश्य श्रव्य सामग्रियों का श्रवण किया। दिल्ली के इस मूर्धन्य तबला विद्वान उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के तबला-वादन, उनकी वादन-शैली, उनका जीवन-परिचय तथा उनकी रचनाओं की जानने की तीव्र जिज्ञासा शोधार्थी में जाग्रत हुई तथा शोधार्थी ने उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं सांगीतिक योगदान पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -

शोध छात्रा ने अपने शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया जिसमें विभिन्न पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएें, शोध-प्रबन्ध आदि हैं जो निम्नवत् है-

पुस्तकें -

- ना धिं धिं ना के जादूगर पं. अनोखे लाल मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. प्रेम नारायण सिंह
- पद्म भूषण पं. सामता प्रसाद 'गुदई महाराज' व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डॉ. रेनू जौहरी
- ताल प्रबन्ध - पं. छोटे लाल मिश्र
- हमारे संगीत रत्न - डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
- भारत के संगीतकार - डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
- तबले का उद्गम एवं दिल्ली घराना (प्राचीन बंदिशों का संचयन)
- दिल्ली घराने में संगीत का योगदान - रमेश मिश्र

शोध प्रबन्ध -

- दिल्ली घराने के प्रसिद्ध उस्ताद नसीर अहमद खाँ: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, आशा सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय (दिल्ली) 2011
- दिल्ली शहर के कलाकारों का शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में योगदान (ख्याल गायकी के संदर्भ में), शीतल सैनी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, 2012

- पं. गुदई महाराज का तबला वादन के क्षेत्र में योगदान, शोधार्थी-रेखा सेठी, दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा, 2016

लघु शोध प्रबन्ध -

- अजराड़ा घराना के सुप्रसिद्ध कलाकार उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सुयश, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा-282005
- तबला वादन के क्षेत्र में मुनीर खाँ साहब का योगदान, कुमारी नीतू, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा-282005
- तबले के दिल्ली घराने की रचनात्मक विशेषताओं का विवेचनात्मक अध्ययन, मोनिका, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा-282005
- उस्ताद जाकिर हुसैन द्वारा दृश्य-श्रव्य सामग्री में प्रस्तुत विस्तारशील बंदिशों का अध्ययन (कायदे के विशेष संदर्भ में), ज्योति, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, 2015

पत्र-पत्रिकाएं -

1. संगीत कला का प्रतिनिधि, संगीत कार्यालय, हाथरस-2041101
    - बनारसी तबले की एक खास चीज, डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, दिसम्बर 2016 (संगीत)
    - पं. भीमसेन जोशी, डॉ. सुधा पटवर्धन, नवम्बर 2015
    - तबले के तालगुरू, रघुवीर सिंह, नवम्बर 2016
    - युग पुरूष उस्ताद हाजी विलायत अली, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, मई 2019
2. संगीत अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस,
    - प्रख्यात तबला वादक, प्रो. मुकुन्द नारायण भाले, डॉ. कृतानन्द पाण्डेय, अप्रैल 2020

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व अब तक किये गये शोधकार्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने यह पाया

कि दिल्ली के महान तबला-वादन स्व. उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के व्यक्तित्व-कृतित्व और उनके सांगीतिक योगदान पर कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए शोधार्थी ने उनके सम्पूर्ण जीवन-वृत्त एवं सांगीतिक योगदान का अध्ययन करने हेतु इसे शोध विषय के रूप में चुना।

विषय-कथन -

'दिल्ली घराने के उत्थान में स्वर्गीय उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब का योगदान'

शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या -

बृहत सतातर कोश तथा बृहद हिन्दी शब्दकोश के अनुसार -

- उस्ताद - पु. (फा.)

  1. गुरू, शिक्षक, अध्यापक
  2. किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित या ज्ञाता

- उस्ताद - अनुभवी, कुशल, गुरू, प्रतिभाशाली, व्यक्ति, विद्वान, विशेष, संगीतकार, सिद्ध कलाकार
- घराना - (कला शैली) कुनबा, राजवंश, वंश, संगीत घराना
- उत्थान - उठाना, ऊँचा करना, प्रेरणा देना, जगाना, समाप्त करना
- योगदान - चंद, सहयोग कराना, वित्तीय सहायता, श्रमदान, सहकर्म, सहयोग, सहायता।

परिसीमांकन -

शोध कार्य की समय-सीमा को देखते हुए शोधार्थी का शोध-कार्य सुविख्यात कलाकार स्व. उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के व्यक्तिव, कृतित्व तथा उनके सांगीतिक योगदान तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन के उद्देश्य -

- तबले के दिल्ली घराने का अध्ययन।
- उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के जीवन-वृत्त का अध्ययन।
- उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के वादन-शैली व वादन विशेषताओं का अध्ययन।

- उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ की शिष्य-परम्परा का अध्ययन।
- उस्ताद लतीफ़ खाँ के कृतित्व एवं उनके सांगीतिक योगदान का अध्ययन।
- उस्ताद लतीफ़ खाँ के वादन में प्रयुक्त रचनाओं का अध्ययन व संकलन।

अध्ययन की आवश्यकता -

स्व. उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ सुविख्यात तबला विद्वान तथा उच्च कोटि के तबला वादक थे, जिन्होंने गुरूजनों से अर्जित ज्ञान का संरक्षण तो किया, साथ ही अपने शिष्यों को भी उस कला को हस्तान्तरित किया। चूँकि शोधकर्त्री स्वयं तबले की छात्रा है और व तबला वादक महान संगीतकार उस्ताद लतीफ़ खाँ साहब के सांगीतिक योगदान को संगीत जगत को अवगत कराना चाहती है। अतः शोधकर्त्री ने इस विषय को शोध प्रबंध हेतु चयनित किया।

अध्ययन का महत्व -

प्रस्तावित शोध का महत्व स्व. उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के व्यक्तित्व, कृतित्व व उनके द्वारा संगीत-जगत में किये गये योगदान को संगीत-रसिकों, संगीत-समाज व विद्यार्थियों तक पहुँचाने व अवगत कराना है।

अध्ययन के स्त्रोत -

प्रस्तुत शोध-कार्य पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं, दृश्य-श्रव्य सामगी, ग्रंथकारों व विद्वानों के साक्षात्कार तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, साक्षात्कार व सर्वेक्षण के माध्यम से सम्पन्न किया जायेगा।

अध्ययन की रूपरेखा

भूमिका एवं सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय - उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब का जीवन-परिचय

- पारिवारिक पृष्ठभूमि
- शिक्षा-दीक्षा
- सांगीतिक शिक्षा
- उपलब्धियाँ

द्‌वितीय अध्याय - उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब का घराना व वादन शैली

- घराना और बाज - अर्थ एवं व्याख्या
- वादन शैली की विशेषताएं

तृतीय अध्याय - तबले के दिल्ली घराने में उत्थान में उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ का योगदान

- स्वतंत्र तबला वादक के रूप में
- संगतकार के रूप में
- शिक्षक के रूप में
- रचनाकार के रूप में

चतुर्थ अध्याय - उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के वादन में प्रयुक्त बंदिशें

पंचम अध्याय - विभिन्न विद्‌वानों व कलाकारों के संस्मरण

उपसंहार

संदर्भ सूची

- तबला विशारद - डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी
- हमारे संगीत रत्न - डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
- भारत के संगीतकार - डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
- तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें - डॉ. सुदर्शन राम

- उस्ताद विलायत हुसैन खाँ व्यक्तित्व एवं कृतित्व - ज्योति मैत्रा
- भारतीय संगीत की परम्परा वंशानुक्रम एवं वातावरण - डॉ. हरिकिशन गोस्वामी

सम्भावित प्रश्नावली

1 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ का जन्म कब और कहाँ हुआ?

2 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के माता-पिता का नाम क्या था?

3 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के पिता का व्यवसाय क्या था?

4 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के परिवार में कितने सदस्य थे?

5 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ का व्यवसाय क्या है?

6 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ की पत्नी का नाम क्या था?

7 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ का वैवाहिक जीवन कैसा था?

8 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब की कितनी सन्तान हैं?

9 सन्तानों में कौन-कौन तबला बजा रहा है?

10 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के परिवार में संगीत का कैसा माहौल है?

11 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ के परिवार में कौन-कौन संगीतज्ञ है?

12 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब के प्रथम गुरू कौन थे तथा उन्होंने संगीत की शिक्षा किन-किन गुरूओं से ली?

13 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ साहब की संगीत शिक्षा कब से प्रारम्भ हुई?

14 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ की किन-किन वाद्यों में रूचि थी?

15 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ की शिक्षा-दीक्षा क्या थी तथा कहाँ से ग्रहण की?

16 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ का स्वभाव कैसा था?

17 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ किस प्रकार के कलाकार व गुरू थे?

18 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ की शिष्य व वंश परम्परा में कितने शिष्य है?

19 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ को कब और कहाँ पुरूस्कार प्राप्त हुए?

20 उस्ताद लतीफ़ अहमद खाँ कौन-कौन से सम्मान प्राप्त हुए हैं?